दादाजी का सपना

हॉली कैलर

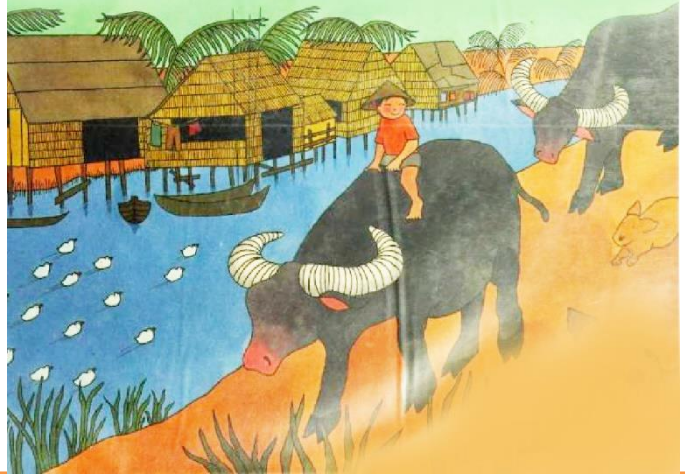

दादाजी का सपना

हॉली कैलर

भाषांतर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

न्यूएन थू हुआंग नॉर्टन पेयसन और न्यूएन शॉन
टुरांग के लिए आदर के साथ।

आमुख

जहाँ तक लोगों की याद्दाश्त उन्हें ले जाती है, वियतनाम के मीकांग नदीमुख में स्थित सरकंडों का मैदान एक विशाल और खूबसूरत कछार रहा था, जिसे किस्म-किस्म के पाखियों, वनस्पतियों और पशुओं ने अपना घर बनाया था। दुनिया के सबसे बड़े उड़ने वाले पक्षी - सारस भी वहाँ बसते थे। वियतनाम के निवासी उन्हें लम्बी आयु और खुशहाल परिवारों का प्रतीक मान उनकी रक्षा करते थे।

पर वियतनाम युद्ध के दौरान कछार का पानी सुखाने के लिए कई नहरें खोदी गईं। इससे वहाँ उगने वाली उन वनस्पतियों को नुकसान हुआ जो सैनिकों को छुपने की आड़ उपलब्ध करवाते थे। इन नहरों से सरकंडों के मैदान में पानी का प्राकृतिक बहाव नष्ट हो गया जिससे पशु-पक्षियों का वहाँ रहना असंभव हो गया। उनमें से अधिकतर या तो गायब हो गए या फिर मर गए। युद्ध के बाद ज़्यादातर ज़मीन धान (चावल) के खेतों में तब्दील हो गई।

पर कुछ परिवारों को सारस याद हैं। वे कछार को वापस बहाल करना चाहते हैं ताकि सारस वहाँ लौट सकें। पर अधिकतर नौजवान उस ज़मीन का इस्तमाल धान की खेती के लिए करना चाहते हैं। पुराने ज़माने की परंपराएं और भाविष्य की ज़रूरतों के बीच संतुलन तलाशना हमेशा मुश्किल होता है।

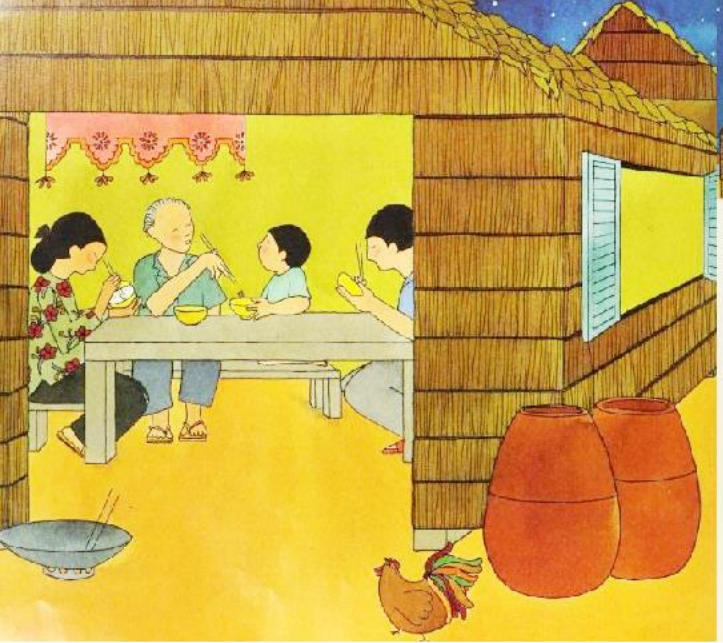

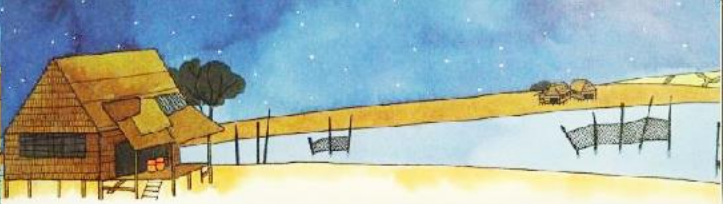

“नए बांध बन चुके हैं,” दादाजी ने नाम के कटोरे में मछली का टुकड़ा डालते हुए कहा।

“तो क्या सारस अब लौट आएंगे?” नाम ने पूछा।

दादाजी ने गहरी उसांस खींची और अपने कटोरे में कुछ चावल डाला। “देखें क्या होता है। एक समय वे इतने सारे हुआ करते थे कि जब वे अपने खाने-रहने की जगह से उड़ते तो सर्दियों का आसमान उनसे पूरा का पूरा ढ़क जाता था। तब युद्ध शुरू हुआ और जब तक युद्ध खत्म हुआ वे जा चुके थे।”

“आखिर वे गए कहाँ?”

“उन जगहों पर जो ज़्यादा महफूज़ थीं,” दादाजी बोले, “और जहाँ खाने को काफी कुछ बचा हुआ था।”

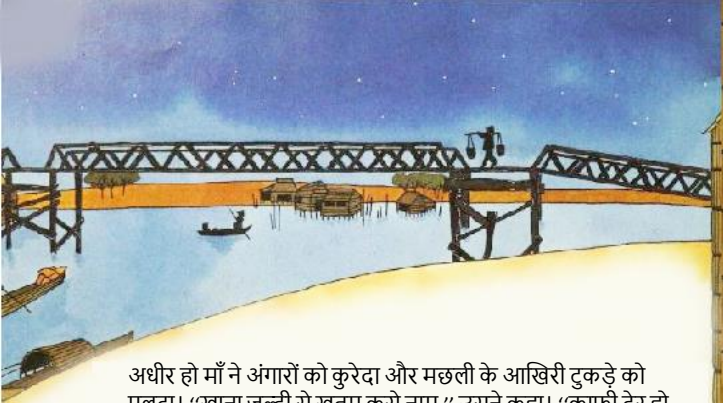

अधीर हो माँ ने अंगारों को कुरेदा और मछली के आखिरी टुकड़े को पलटा। ‘‘खाना जल्दी से खतम करो नाम,’’ उसने कहा। ‘‘काफी देर हो चुकी है। तुम्हारे दादाजी ने तो हमारे पूरे टॉम नौंग गाँव को ही इन पक्षियों की फिक्र में उलझा दिया है, जो बिलकुल ही निकम्मे पक्षी हैं।’’

पापा ने नाम का हाथ थपथपाया। ‘‘जब बरसात का मौसम आएगा तो बांध से घिरी ज़मीन पानी से भर जाएगी, जैसे पहले भरा करती थी। तब वहाँ फिर से पौधे और झाड़ उगेंगे और सारस भी अपने घर लौट आएंगे।’’

‘‘अगर वे ना लौटे तो?’’ नाम ने फिक्रमंद हो पूछा।

“अगर वे नहीं लौटते,” पापा ने अपना कटोरा नीचे रखते हुए कहा, “तो किसान वह ज़मीन वापस ले लेंगे जो तुम्हारे दादा और दूसरे बुज़ुर्गों ने सारसों के लिए बचा रखी है। वे उसमें धान रोप देंगे।

दादाजी ने नाखुशी से सिर हिलाया। “और हम सब के पास सिर्फ मोटी तोंदें होंगी,” वे नाराज़गी से बोले और मेज़ से उठ गए।

“सोने का वक्त हो चुका है नाम,” माँ ने तल्खी से कहा।

नाम दादाजी के पीछे-पीछे पिछवाड़े वाले बरामदे में गया। उसने अपनी चटाई उस तरफ सरकाई जहाँ दादाजी बैठे थे। उसके दोनों पिल्ले चो-टॉम ओर चो-पेह्न भी उसके पास ही पसर गए।

"दादाजी," नाम बोला, "आप इतना क्यों चाहते हो कि सारस लौट आएं?"

"क्योंकि वियतनाम उनका भी घर था," बुज़ुर्गवार ने जवाब दिया। "सारस ताकतवर परिन्दे होते हैं और लम्बे समय तक ज़िन्दा रहते हैं। हम सब मानते थे कि वे हमारे लिए सौभाग्य लाते हैं। और अब तो लड़ाई खत्म हो चुकी है और हम सब सलामती से हैं। उन पक्षियों की सलामती बेहद ज़रूरी है, नहीं तो वे हमेशा के लिए चले जाएंगे।

दादाजी देर तक चुपचाप बैठे रहे।

"क्या आप आज कहानी नहीं सुनाओगे?" नाम ने आखिरकार पूछ ही लिया। दादाजी मुस्कुराए। "एक छोटी-सी," उन्होंने कहा, "क्योंकि बहुत देर हो चुकी है। "पुराने ज़माने में," दादाजी ने शुरुआत की, "जब नदी में ऊदबिलाव रहा करते थे, मेरे पिता ने दो छोटे ऊदबिलावों को पकड़ा। वे उन्हें मेरे लिए घर ले आए। हम उन्हें पकी मछलियों के टुकड़े खिलाया करते थे। तब हमने उन्हें मछली पकड़ना और उन्हें पकड़ कर घर लाना सिखाया।"

"वे अपनी पकड़ी मछली खुद ही खा क्यों नहीं लेते थे?" नाम ने जानना चाहा।

दादाजी हंस पड़े। "इसलिए क्योंकि हमने उन्हें सिर्फ पकी हुई मछली ही खाना सिखा दिया था। वे यह भूल चुके थे कि ज़िन्दा मछली को पकड़ कर कच्चा ही खा लिया जा सकता है!"

दादाजी कुछ और याद कर हंसे। ‘‘पता है, अगर उन्हें नदी में मछली नहीं मिलती तो वे उसे चुरा लाते थे। जो औरतें नदी किनारे बैठी खाना पका रही होती थीं उन्हें पता ही नहीं चलता कि कब उनकी एक मछली पार कर ली गई है। बाद में वे यह समझ ही नहीं पातीं कि उनका खाना कम कैसे पड़ गया!’’

नाम को मुस्कुराते-मुस्कुराते ही नींद आ गई, क्योंकि ऊदबिलावों की कहानी उसकी पसन्दीदा कहानी थी।

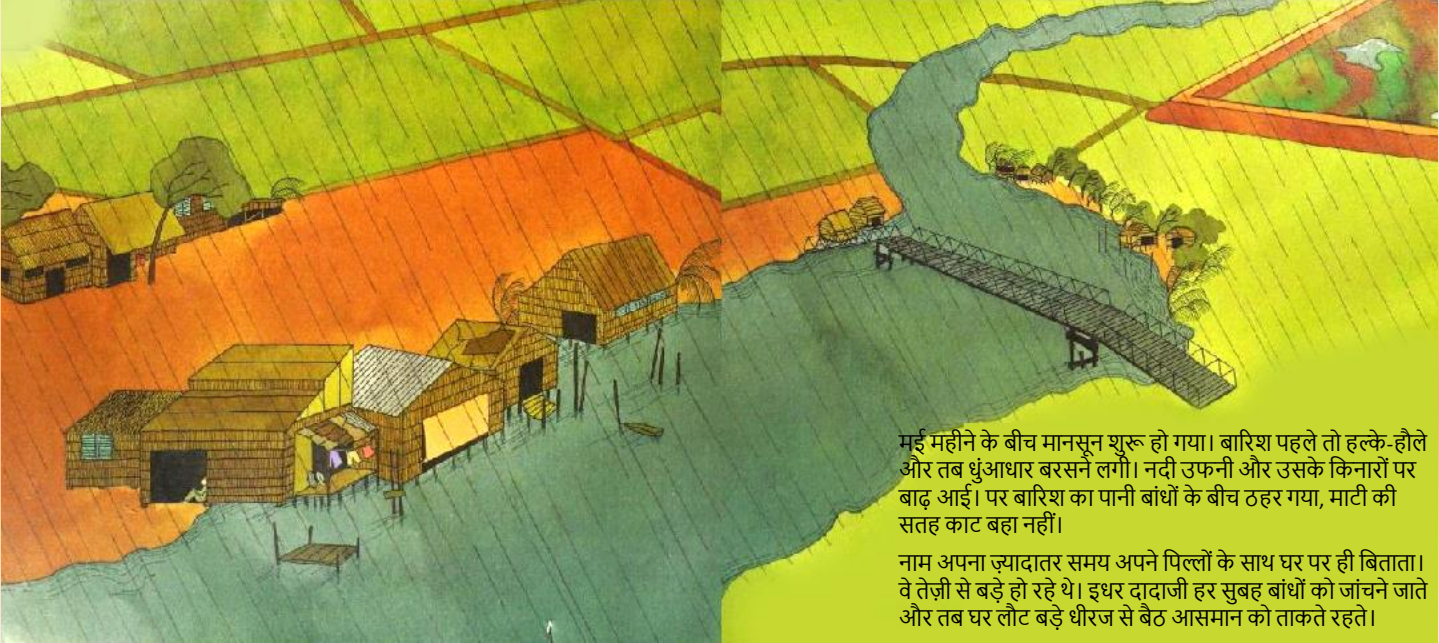

मई महीने के बीच मानसून शुरू हो गया। बारिश पहले तो हल्के-हौले और तब धुंआधार बरसने लगी। नदी उफनी और उसके किनारों पर बाढ़ आई। पर बारिश का पानी बांधों के बीच ठहर गया, माटी की सतह काट बहा नहीं।

नाम अपना ज़्यादातर समय अपने पिल्लों के साथ घर पर ही बिताता। वे तेज़ी से बड़े हो रहे थे। इधर दादाजी हर सुबह बांधों को जांचने जाते और तब घर लौट बड़े धीरज से बैठ आसमान को ताकते रहते।

आखिरकार बरसात थमी। अब दादाजी हर सुबह जल्दी उठ सारसों की तलाश में निकलते। जब वे वापस लौटते माँ उनके लिए गरमागरम शोरबा तैयार रखतीं।

“क्या आज आपको कोई सारस दिखे?” पापा उनसे पूछते।

दादाजी उदासी से ना में सिर हिलाते। पर फौरन यह भी जोड़ते, “पर देखना वे ज़रूर आएंगे। कल रात मुझे वाकई यह लगा कि मैं उनकी पुकार सुन रहा हूँ।”

“आप अतीत में जी रहे हैं,” माँ भौं सिकोड़ कर कहती। “वे पक्षी यहाँ से चले गए हैं।”

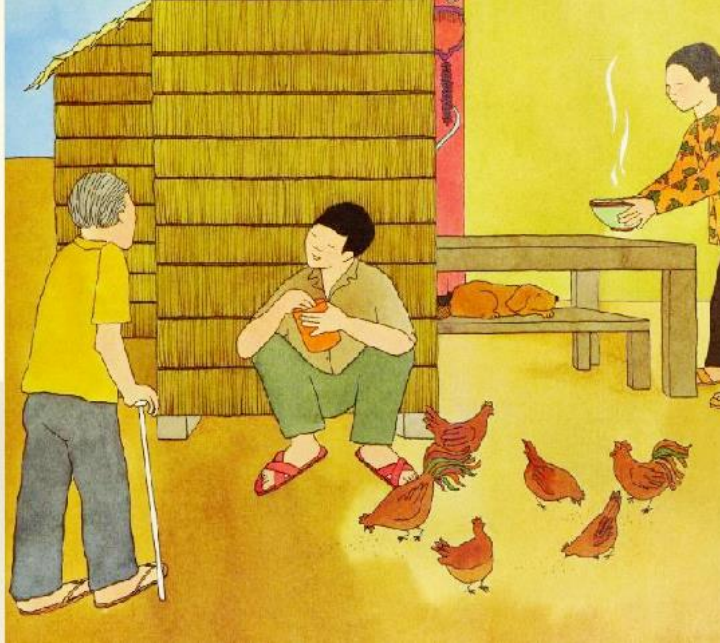

सूखे दिन समाप्त होने का आए पर सारसों का कहीं नामो-निशान नहीं था। गाँव की पंचायत ने बैठक की और तय किया कि अगर अगली बरसात के पहले सारस नहीं लौटते तो उनके लिए आरक्षित की गई ज़मीन पर धान रोप दिया जाएगा।

दादाजी बेहद निराश हो गए। ''खैर, मेरा वह सपना ही बेवकूफी भरा था,'' वे उदासी से बोले। नाम यह सुन दुखी हो गया।

कुछ सप्ताह बाद एक दिन नाम भैसों की रखवाली कर रहा था। उसके कुत्ते चो-टॉम और चो-पेह्न भी मैदान में खेलते हुए चले आए। दोनों के मुँह में छोटे-छोटे पाखी थे।

नाम मुस्कुराया। "बड़े अच्छे कुत्ते हो तुम दोनों," वह बोला। क्योंकि उसने देख लिया था कि उन्होंने उन नन्हें चूज़ों को कोई चोट नहीं पहुँचाई थी।

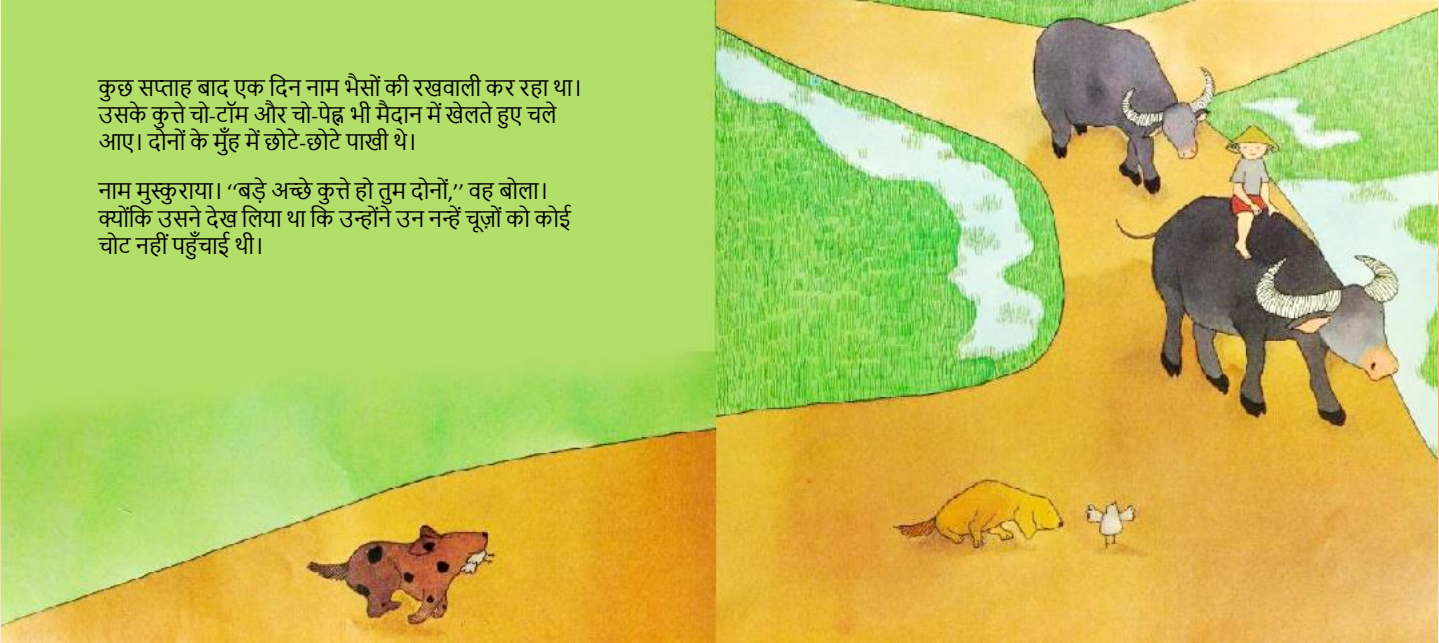

जब नाम घर लौटा, दादाजी झपकी ले रहे थे।

“मेरे कुत्ते ठीक आपके ऊदबिलावों जैसे ही हैं दादाजी!” नाम ने ज़ोर से कहा। दादाजी ने आँखें खोलीं और पूछा, “क्या वे भी मछलियाँ पकड़ रहे हैं?”

“नहीं,” नाम ने हंस कर जवाब दिया। “पाखी, पाखी के चूज़े।” तब नाम ने फुसफुसा कर पापा से कहा, “वे सुरमई से रंग के थे, बड़े ही अजीब से। मैंने वैसे चूज़े पहले कभी नहीं देखे।”

पापा ने सोचते हुए अपनी ठुड्डी पर हाथ फेरा। तब होठों पर ऊँगली रख इशारा किया, ताकि नाम आगे कुछ न बोले।

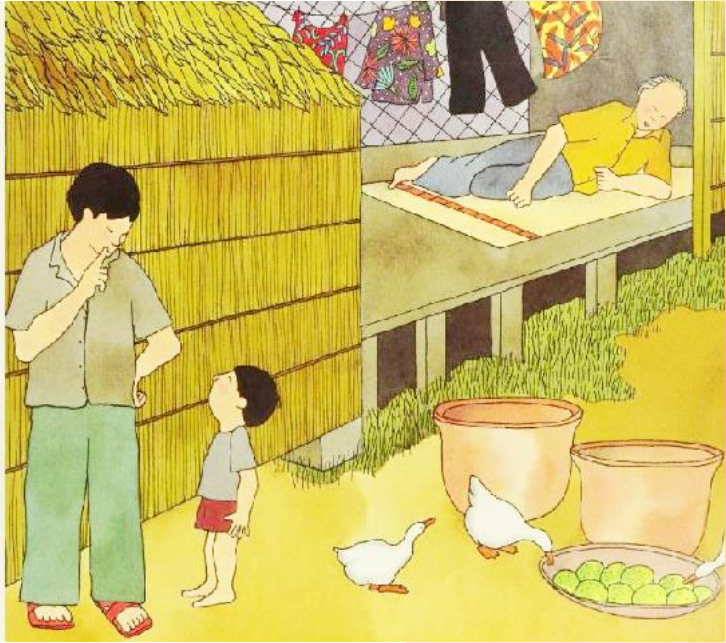

अगली सुबह नाम और पापा अल्ल सुबह गुपचुप घर से निकले। गाँव में अंधेरा था और शांति भी। जब तक वे उस जगह पहुँचे जहाँ पहले सारस खाते-बसते थे सूरज उगने ही वाला था। कुछ देर में जब नाम की आँखें उस हल्के से प्रकाश की आदी हुईं, उसे दूर सारस दिखाई देने लगे।

''मैंने तबरीबन दो सौ तो गिन लिए हैं!'' पापा बोले।

''क्या मैं अब दादाजी को बता सकता हूँ?'' नाम ने चिरौरी की। पापा ने हाँ में सिर हिलाया और नाम को गाँव की दिशा में धकिया दिया।

नाम के पैर फरटि से बढ़े। सूरज चमचमाने लगा था। नाम जानता था कि जल्द ही सारस आकाश में होंगे।

“जल्दी चलिए दादाजी,” वह सड़क पर दौड़ते हुए चीखा। नाम दादाजी का हाथ थामे उन्हें पुलिया पार बांध की ओर घसीटने लगा।

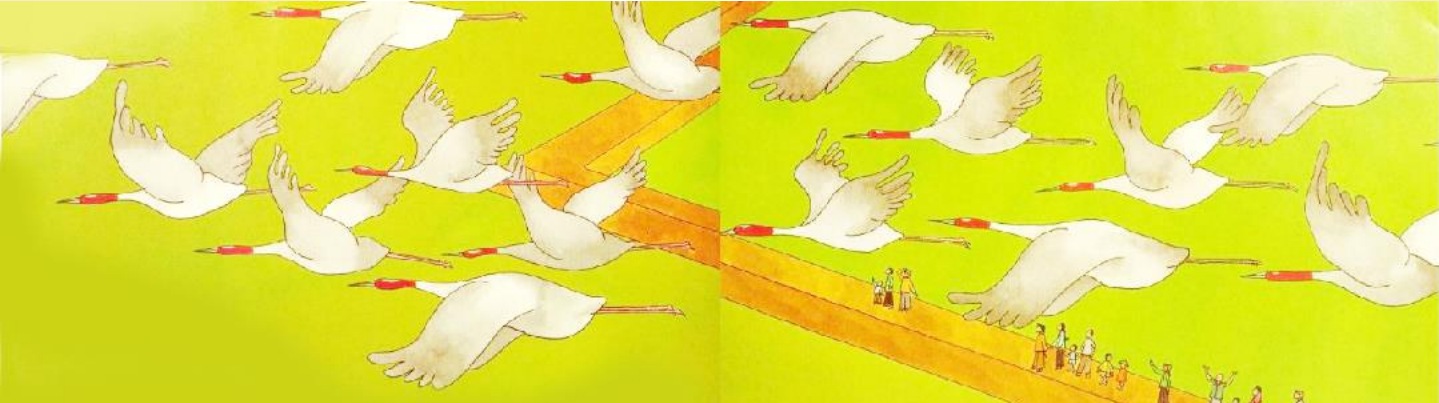

चन्द ही मिनटों में टॉम-नौंग गाँव के ऊपर इतने सारस थे जिनको कोई गिन ही नहीं सकता था। हवा में उनकी दमदार आवाज़ें गूंज उठीं। पूरा का पूरा गाँव उन्हें देखने निकल आया।

दादाजी को अपनी आँखों पर भरोसा ही नहीं हो रहा था। "कितने खूबसूरत हैं ना वे!" वे खुशी से चिल्ला पड़े।

और सबने यह माना - माँ तक ने।

उस रात जब नाम सोने की तैयारी कर रहा था, दादाजी उसके पास आकर बैठे।

“आपका सपना तो अच्छा ही था,” नाम धीरे से बोला। “क्या आपको लगता है कि सारस अब यहीं रहेंगे?” नाम ने जानना चाहा।

“यह तो तुम पर निर्भर करेगा,” दादाजी बोले।

और नाम उनकी बात समझ गया।